Reginald Massey
रेगिनाल्ड मैसी

हमें भविष्य की ओर देखना चाहिए। हम सिर्फ अतीत को देखते नहीं रह सकते हैं।

आरंभ

मेरा नाम रेगिनाल्ड मैसी है। मैं 23 नवंबर, 1932 को लाहौर शहर में पैदा हुई थी। मैं सर्वधर्म-समभाव वाले माहौल में पली-बढ़ी। जब ईद होती, तो हमें मुस्लिम परिवारों से न्यौता मिलता। जब रोशनी का त्योहार दीवाली होता, तो हमें हिंदुओं के घरों से बुलावा आता। जब क्रिसमस होता, तो वे सब लोग हमारे घर पर मेरी माँ के हाथ का बना क्रिसमस केक चखने आते।

लाहौर बेहद अंतर्राष्ट्रीय किस्म की जगह थी... एक शैक्षणिक केंद्र था। लाहौर की स्थिति बहुत, बहुत खास थी। बाद में, मैंने पाया कि पंजाब जैसा बहु-धर्म, बहु-संस्कृति, बहु-भाषी समाज उत्तर भारत के दूसरे किसी कस्बे या शहर में नहीं था।

आगे चलकर जब यह घोषणा हुई कि बँटवारा होने जा रहा है; कि भारतीय उप-महाद्वीप से ब्रिटिश सत्ता की विदाई होने वाली है, तो यहाँ तक कि मुसलमान भी इस बात पर यकीन नहीं कर सके। इसका आना किसी सदमे जैसा था। तो उन्होंने एक बाउंड्री कमीशन बनाया जिसने कहा कि बँटवारा होने जा रहा है। यहाँ पर मैं आपको यह बता दूँ कि भारत के बँटवारे और खासकर पंजाब के बँटवारे का फैसला लाहौर में नहीं किया गया था। पंजाबियों से कभी भी विचार-विमर्श नहीं किया गया था।

शुरुआती हमले रावलपिंडी इलाके में सिखों के खिलाफ हुए, जो कि एक मुस्लिम बहुल इलाका था। इसकी प्रतिक्रिया तुरंत पूर्वी पंजाब में मुसलमानों के खिलाफ हुई, जो कि सिख बहुल इलाका था।

सौभाग्यवश, हमारे एक मुसलमान मित्र ने रेडक्रॉस के झंडे वाली घोड़ों से खींची जाने वाली एक बग्घी, जिसे तांगा कहते हैं, में बिठाकर लाहौर से भारत भागने में हमारी मदद की जहाँ पहुँचने की कोशिश हम इसाई कर रहे थे। लाहौर से लेकर वाघा अटारी बॉर्डर तक के 14 मील के सफर में मैंने कत्लेआम देखा। सीमा पार कर लेने के बाद जब हम उस जगह पर पहुँचे जिसे हम शांतिपूर्ण भारत समझा था, तो वहाँ और भी ज्यादा कत्लेआम मचा हुआ था।

हमें भविष्य की ओर देखना चाहिए। हम सिर्फ अतीत को देखते नहीं रह सकते हैं। इसीलिए इस परियोजना के चलने से मुझे खुशी है। अगर भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश के बीच सौहार्द कायम होने वाला हो, हालाँकि मुझे यह कहते हुए नफरत होती है -- पर यह भूतपूर्व साम्राज्यवादी स्वामियों के घर में होने वाला है। यहाँ से भविष्य की यात्रा की जानी चाहिए।

समाप्त